प्रथम दिवस आवरण FIRST DAY COVER

हरि सिंह नलवा HARI SINGH NALWA

HARI SINGH NALWA

Hari Singh Nalwa was born in 1791 in Gujranwala, now in Pakistan, in an ordinary *Khatri* family.

He joined the ranks of the *Khalsa* at the tender age of ten and rose from a *Khidmatgar* to *Sardar* at the Court of Maharaja Ranjit Singh in just three years' time. He earned the title 'Nalwa' for killing a tiger single-handedly with a sword while still in his teens. He soon became one of the trusted generals of Maharaja Ranjit Singh.

Hari Singh was a dauntless warrior. He played an important role in wresting Kasur, Multan and Kashmir from the Afghans. His conquests ultimately lead to the downfall of the Afghan Saddozais–descendants of Ahmed Shah Durrani. His heroics were well recognized and he was offered the post of the Governor of Kashmir in 1820. He was also later bestowed with a *jagir* in western Kashmir mountains which he held till his death. He transformed this region, then known for its violence and profitless tracts, to one known for commercial success in a short span of fifteen years. He built the town of Haripur. Today, Haripur, named after Hari Singh Nalwa, is a district and city in Pakistan.

The battle of Jamrud, fought between the Sikhs and the Afghans in 1837, was the ultimate highlight of Nalwa's career. On this occasion, a skeleton Sikh force faced the wrath of the entire army of the Afghans supported by thousands of armed peasantry. Though Hari Singh died within hours of being grievously wounded, the mere suspicion that he might be alive kept the entire Afghan army at bay out of sheer fear – not just for a day or two, but for over a week, by which time reinforcements arrived from Lahore.

Department of Posts salutes the courage of Hari Singh Nalwa by issuing a Commemorative Postage Stamp.

Credits:-

Text : Based on the material furnished by the proponent.

Stamp/FDC/
Cancellation : Alka Sharma

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	:	30 अप्रैल, 2013
Date of Issue	:	30 April, 2013
मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	3.2 लाख*
Stamps Printed	:	0.32 Million*
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

* 0.1 लाख प्रस्तावक हेतु
* 0.01 Million for the proponent

मूल्य ₹ 5.00

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

हरि सिंह नलवा
HARI SINGH NALWA

विवरणिका BROCHURE

हरि सिंह नलवा

हरि सिंह नलवा का जन्म वर्ष 1791 में गुजरांवाला, जो कि अब पाकिस्तान में है, के एक साधारण खत्री परिवार में हुआ था।

उन्होंने 10 वर्ष की छोटी उम्र में खालसा के पद से शुरुआत की और मात्र तीन वर्षों में ही महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में खिदमतगार से सरदार के पद पर पहुंच गए। उन्होंने किशोरावस्था में अकेले ही तलवार से एक चीते को मारकर 'नलवा' की पदवी अर्जित की। उन्होंने शीघ्र ही महाराजा रणजीत सिंह के विश्वसनीय सेनापतियों की सूची में अपना स्थान बना लिया।

हरि सिंह एक निर्भीक योद्धा थे। उन्होंने कसूर, मुलतान और कश्मीर को अफगानों से मुक्त कराने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अन्ततोगत्वा उनकी जीत से अहमद शाह दुर्रानी के वंशज–अफगान सद्दोजाइस का पतन प्रारंभ हुआ। उनकी वीरता को पूर्ण पहचान मिली और उन्हें वर्ष 1820 में कश्मीर के राज्यपाल (गवर्नर) का पद दिया गया। बाद में उन्हें पश्चिमी कश्मीर के पहाड़ों में एक जागीर भी सौंपी गई जो उनकी मृत्यु तक उनके पास रही। उन्होंने इस क्षेत्र को जो कि उस समय हिंसा और लाभहीन भू–भाग के लिए जाना जाता था, को 15 वर्षों की अल्पावधि में वाणिज्यिक सफलता के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने हरिपुर नगर का निर्माण किया। हरि सिंह नलवा के नाम पर रखा हरिपुर आज पाकिस्तान में एक जिला और शहर है।

वर्ष 1837 में सिखों और अफगानों के बीच लड़ी गई जमरूद की लड़ाई नलवा के सैन्य जीवन की विशेष उपलब्धि थी। इस अवसर पर, मुट्ठी भर सिख सेना ने हजारों सशस्त्र किसानों के समर्थन वाली पूरी अफगानी सेना के आक्रोश का सामना किया। यद्यपि, गंभीर रूप से ज़ख्मी हरि सिंह का कुछ ही घंटों में निधन हो गया, परन्तु इस संदेह मात्र के कारण कि वे जीवित हो सकते हैं, पूरी अफगानी सेना भयवश मात्र एक या दो दिन के लिए नहीं बल्कि एक हफ्ते से अधिक समय तक दूर ही रही, जिस बीच लाहौर से अतिरिक्त सैन्य बल पहुंच गया।

डाक विभाग एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए हरि सिंह नलवा की बहादुरी को सलाम करता है।

आभार :

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विरूपण : अलका शर्मा